इकाई-1

भौगोलिक खोजें

भौगोलिक खोजें :

विश्व इतिहास की युगांतकारी घटनाओं में समुद्री यात्राओं एवं भौगोलिक खोजों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। आधुनिक युग के आरम्भ होने में जिन घटनाओं का निर्णायक योगदान रहा है, उनमें यह खोजें भी शामिल हैं। इनकी पृष्ठभूमि उस वैज्ञानिक प्रगति और आर्थिक विकास, विशेषकर व्यापारिक परिवर्त्तनों के द्वारा रची गई जो मध्ययुग के अंतिम चरण से ही आरम्भ हो गई थीं। इस कार्य में यूरोप के देशों ने अग्रणी भूमिका निभाई और यही कारण था कि आधुनिक युग में यूरोप का वर्चस्व समस्त विश्व में स्थापित हो गया । यह बात और है कि भौगोलिक खोजों का प्रारम्भ करने वाले देश स्पेन एवं पुर्त्तगाल इस प्रतिस्पर्द्धा में धीरे-धीरे पिछड़ते चले गए और नये देशों जैसे- इंग्लैंड, हॉलैंड, फ्रांस तत्पश्चात् जर्मनी को इस दिशा में अधिक सफलता मिली।

हम जानते हैं कि विश्व की प्रारम्भिक सभ्यताओं के काल से ही व्यापार-एवं वाणिज्य परस्पर सम्पर्क का कारण रहा है। यह व्यापार मुख्यत: एक निश्चित मार्ग के माध्यम से होता था। प्राचीन एवं मध्यकाल में भी यूरोप एवं एशिया के मध्य प्राय: इन्हीं मार्गों का प्रयोग किया जाता था। परन्तु विश्व के कई ऐसे क्षेत्र थे, जिनमें जन-जीवन तो विद्यमान था लेकिन शेष विश्व से उनका जुड़ाव नहीं था, जैसे- अमेरिका, अफ्रिका, आस्ट्रेलिया तथा एशिया के अन्य हिस्से आदि। यद्यपि 13 वीं शताब्दी में भारत होकर चीन तक की यात्रा विवरणों ने यूरोपियनों को दक्षिण-पूर्वी एशियाई समृद्धि का एहसास तो कराया था परन्तु इसका विशेष प्रभाव नहीं पड़ा । कालांतर में व्यापक स्तर पर हुए भौगोलिक खोजों तथा उससे प्राप्त उपलब्धियों ने यूरोप में आधुनिक युग का मार्ग प्रशस्त किया।

> **पुर्त्तगाली यात्री मार्कोपोलो ने विजयनगर साम्राज्य की समृद्धि एवं चीन के शासक कुबलय खाँ के दरबार के वैभव का वर्णन अपने यात्रा वृत्तान्त में किया है।**

मध्यकालीन यूरोपीय इतिहास का हम यदि अध्ययन करेंगे तो पायेंगे कि यह काल सामंती प्रवृतियों का काल था। इस काल में न तो व्यापार-वाणिज्य गतिशील था और न ही धर्म का स्वरूप उदार एवं मानवीय था। पृथ्वी के बारे में ज्ञान अत्यल्प एवं अंधविश्वास से युक्त था। सीमित भौगोलिक ज्ञान के कारण सामुद्रिक व्यापार भी सीमित था। मध्ययुगीन लोगों को विश्वास था कि पृथ्वी चपटी है एवं समुद्र में अधिकतम दूरी पर जाने पर पृथ्वी के किनारों से गिरकर अनन्त में विलीन हो जाने का भय बना रहता था। समुद्र यात्रा अत्यधिक कष्टपूर्ण एवं असाध्य थी। जहाज छोटे और असुरक्षित थे तथा गति एवं सुरक्षा के लिए हवा पर निर्भरता थी। कम्पास या कुतुबनुमा जैसे दिशासूचक यंत्र का ज्ञान अभी नहीं हुआ था। अतः दिग्भ्रमित होकर समुद्र में भटक जाने का भय भी बना रहता था। समुद्री यात्राओं के लिए राज्य की ओर से किसी प्रकार की सहायता नहीं दी जाती थी। इस विषम परिस्थिति में नाविकों एवं व्यापारियों द्वारा अटलांटिक (अंधमहासागर) जैसे महासागर की यात्रा करना अत्यंत दुष्कर था।

भौगोलिक खोजों की पृष्ठभूमि :

इस बीच यूरोप में कुछ ऐसी घटनाएँ घट रही थीं, जिसके प्रभावस्वरूप यूरोप मध्ययुगीन मानसिकता से निकलने को उद्धत हुआ। 11वीं-12वीं शताब्दी में जेरूशलम (आधुनिक इजरायल में अवस्थित) पर अधिकार के मुद्दे को लेकर हुए धर्मयुद्ध में जब यूरोपीय सामंत मध्यएशिया की नवीन शक्ति अरबों से पराजित हुए तो सामंती गौरव के मिथ्याभिमान से ग्रसित यूरोपीय दंभ टूटने लगा। परन्तु इसके कुछ सकारात्मक परिणाम भी सामने आये। धर्मयुद्ध के दौरान ही यूरोपियनों को यह महसूस होने लगा था कि दुनिया के हर पहलू को समझा जाए। इन घटनाओं ने यूरोप में पुनर्जागरण की पृष्ठभूमि भी तैयार की।

मध्ययुग में अरबों और तत्पश्चात् तुर्कों ने विशाल अंतर्राष्ट्रीय साम्राज्यों का निर्माण किया। इधर 15वीं शताब्दि के पाँच दशक पूर्व तक यूरोप और एशिया के मध्य व्यापार कुस्तनतुनिया के मार्ग से होता था। परन्तु 1453 ई० में कुस्तनतुनिया पर तुर्की आधिपत्य से यूरोपीय व्यापारियों के लिए इस मार्ग से व्यापार करना निरापद नहीं रहा। क्योंकि तुर्कों ने इस मार्ग से व्यापार के बदले भारी कर वसूलना शुरू कर दिया था। जिसका हल ढूँढ़ना यूरोपीयनों के लिए आवश्यक था।

इस काल में हुए नये-नये आविष्कारों ने समुद्री यात्रा एवं नौसेना के विकास को आसान कर दिया। यूरोपवासियों ने कम्पास का ज्ञान अरबों से सीखा। इटली, स्पेन एवं पुर्त्तगाल के समुद्रतटीय इलाकों में नाव निर्माण कला में परम्परागत पद्धति की जगह खाँचा पद्धति विकसित हुई, जिससे बड़े एवं मजबूत जहाज बनाए जाने लगे। दूरबिन का आविष्कार भी हो चुका था जो

सामुद्रिक अभियानों में काफी सहायक था। अब मानचित्र में काफी सुधार हो चुका था। इस संदर्भ में एस्ट्रोलोब (अक्षांश जानने का उपकरण) भी महत्वपूर्ण था। पुर्त्तगालियों ने एक नई किस्म के हल्के और तेज चाल से चलने वाले जहाज **कैरावल** बनाये।

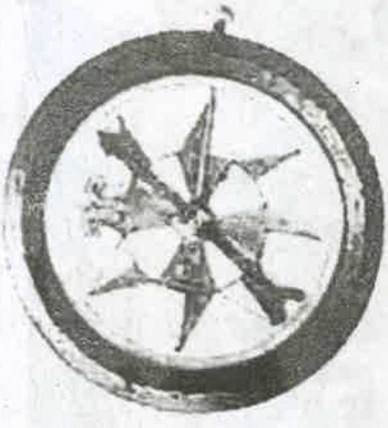

दिशासूचक यंत्र का चित्र

इन नये उपकरणों एवं साहस के बल पर यूरोपीय नाविकों ने अटलांटिक एवं भूमध्य सागर में अपने जहाज उतारे। इसी क्रम में 1488 ई० में पुर्त्तगाली व्यापारी **बार्थोलोमियो डियाज** अफ्रिका के पश्चिमी तट होते हुए दक्षिण अफ्रिका के दक्षिणतम बिन्दु **उत्तमआशा अंतरीप** (Cape of good hope) तक पहुँच गया। 1492 ई० में क्रिस्टोफर- कोलम्बस द्वारा अमेरिका की खोज की गई। आगे 1498 ई० में पुर्त्तगाल का एक

तत्कालीन नाव का चित्र

(वास्कोडिगामा)

साहसी नाविक वास्कोडिगामा उत्तमआशा अंतरिप होते हुए भारत के मालाबार तट (केरल के कालीकट) तक पहुँच गया, जहाँ स्थानीय शासक 'जमोरीन' द्वारा उसका स्वागत किया गया। ज्ञातव्य है कि वास्कोडिगामा की सफलता के पीछे कुछ नवीन संसाधनों का भी योगदान था। भारत के एक व्यापारी **अब्दुल मजीद** की भेंट वास्कोडिगामा से दक्षिण अफ्रिका में हुई तथा इसी के सहयोग से उसे भारत आने का सीधा मार्ग मिल गया। इससे यूरोपीयनों के साहस में वृद्धि हुई। वास्कोडिगामा द्वारा भारत से लाए गए वस्तुओं को 26 गुणा मुनाफे पर यूरोपीय बाजारों में बेचा गया। 'अमेरिका' अर्थात् नई दुनिया की खोज यूरोपीयनों की एक नई उपलब्धि थी, जिसे 1492 में ही कोलम्बस ने प्राप्त किया। यद्यपि कोलम्बस ने अमेरिका को भारतीय उपमहाद्वीप का हिस्सा समझा और यहाँ के निवासियों को **रेड इंडियन** कहा। बाद में स्पेन के नाविक **अमेरिगु वेस्पुची** ने नई दुनिया को विस्तार से ढूँढ़ा और इसे एक महाद्वीप बताया। इसी के नाम पर इस क्षेत्र का नाम अमेरिका पड़ा। 1519 ई० में मैग्लन ने पूरी दुनिया का चक्कर जहाज से लगाया और यह धारणा पुष्ट हो गई कि सभी समुद्र एक दूसरे से जुड़े हैं। आगे कैप्टन कुक ने ऑस्ट्रेलिया की भी खोज की, साथ-साथ न्यूजीलैंड के द्वीपों का भी पता लगाया। सर जॉन और सेवास्टिन कैबोट ने न्यूफाउंडलैंड के द्वीपों का पता लगया। । भौगोलिक खोजों को प्रोत्साहन देने में विभिन्न यूरोपीय देशों के शासकों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिसमें पुर्त्तगाल के राजकुमार **हेनरी-द-नेवीगेटर** तथा स्पेन की महारानी **ईसाबेला** प्रमुख थी। इस प्रकार 16 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक लगभग समस्त दुनिया की जानकारी यूरोप को हो चुकी थी।

(कोलम्बस)

नई दुनिया : अमेरिकी महाद्वीप को यूरोपीयों द्वारा नई दुनिया कहा गया। क्योंकि कोलम्बस की यात्रा से पूर्व इसकी कोई जानकारी नहीं थी।

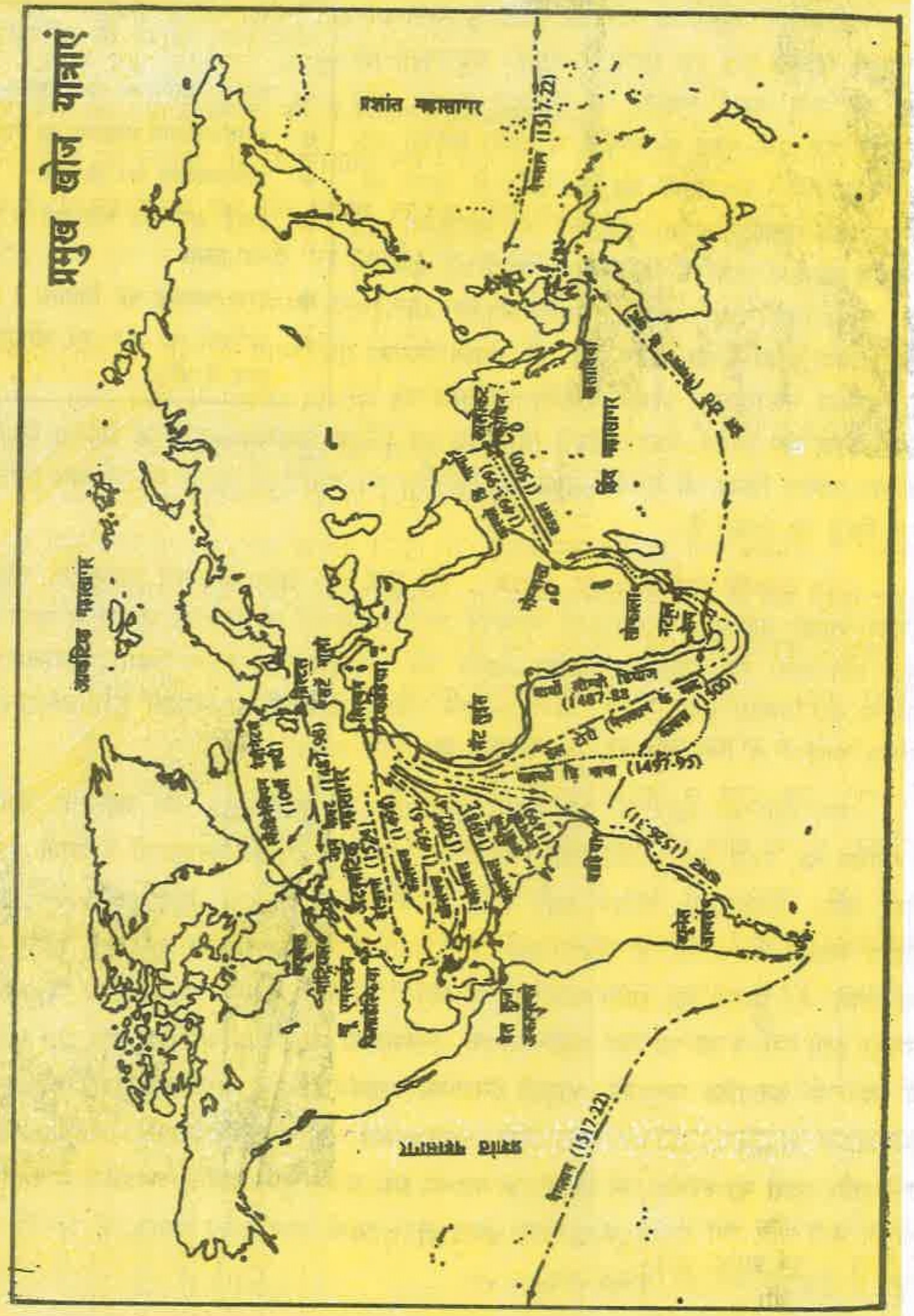
प्रमुख खोज यात्राएं
प्रशांत महासागर
अटलांटिक महासागर
हिंद महासागर

भौगोलिक खोजों के परिणाम

> **भौगोलिक खोजों के परिणाम :**
> - व्यापार-वाणिज्य पर प्रभाव
> - औपनिवेशिक साम्राज्य का विकास
> - वाणिज्यवाद का विकास
> - ईसाई धर्म एवं पश्चिमी सभ्यता का प्रसार
> - दास-व्यापार का विकास
> - भ्रांतियों का अंत एवं भौगोलिक ज्ञान में वृद्धि।

भौगोलिक खोजों के परिणाम काफी दूरगामी और महत्वपूर्ण साबित हुए। इस घटना ने पहली बार लोगों को संसार के एक वृहत्त भूखण्ड से परिचित कराया और विश्व के देश एक-दूसरे के सम्पर्क में आये। एशिया और यूरोप की विभिन्न सभ्यताओं का, जो पहले से विलग थी, परस्पर संपर्क स्थापित हुआ। नये देशों की खोजों के द्वारा न केवल नए उपनिवेशों के साथ व्यापार करने को प्रोत्साहन मिला वरन् उन्होंने वहाँ अपनी सभ्यता-संस्कृति, धर्म एवं साहित्य का प्रचार-प्रसार करने का भी प्रयास किया । परन्तु इसका नकारात्मक प्रभाव यूरोपीय उपनिवेशवाद के रूप में उभर कर सामने आया। अपनी विकसित एवं भौतिक आवश्यकताओं के निमित्त इन्होंने उन देशों का शोषण किया जो यूरोपीय देशों के उपनिवेश थे। भौगोलिक खोजों के परिणाम निम्नरूपेण स्पष्ट किये जा सकते हैं-

(1) व्यापार वाणिज्य पर प्रभाव : नये देशों की खोज एवं नये व्यापारिक संपर्कों ने यूरोपीय व्यापार-वाणिज्य में क्रांतिकारी परिवर्त्तन लाये। उपनिवेशों के आर्थिक शोषण से यूरोपीय देश समृद्ध होने लगे। इस प्रगति ने यूरोपीय व्यापार को चरमोत्कर्ष पर पहुँचा दिया। फलस्वरूप मुद्रा व्यवस्था का विकास हुआ । हुंडी, ऋणपत्र आदि व्यापारिक साख का विकास हुआ। व्यापार अपने स्थानीय स्वरूप से विकसित हो कर वैश्विक रूप लेने लगा।

नये देशों की खोज के पूर्व व्यापार मुख्य रूप से भूमध्यसागर और बाल्टिक सागर तक ही सीमित था, परन्तु अब इसका स्थान अटलांटिक, हिंद तथा प्रशांत महासागरों ने लिया । फलतः पेरिस, लंदन, एम्सटरडम, एंटवर्प आदि शहर विश्वव्यापी व्यापार के प्रमुख केन्द्र बन गए और यूरोपीय व्यापार पर इटली का एकाधिकार जाता रहा। इसके बदले स्पेन, पुर्त्तगाल, हॉलैंड-इंग्लैंड तथा फ्रांस का प्रभाव बढ़ गया। कालांतर में अपने विशाल साम्राज्य को संभालने में स्पेन और पुर्त्तगाल इतने निमग्न हो गए कि इन्होंने अपना साम्राज्य ही खो दिया। यूरोपीय देशों द्वारा खोजे गए नये देशों से आयातित बहुमूल्य धातुओं विशेषकर अमेरिका से आयातित सोना तथा चांदी ने अर्थव्यवस्था के स्वरूप को ही बदल दिया। फलतः 80 वर्षों तक यूरोपीय अर्थव्यवस्था चांदी पर निर्भर रही। इससे मुद्रास्फीति की स्थिति उत्पन्न हो गई। बदले हुए आर्थिक स्वरूप में व्यापार की प्रधानता बनी और वर्ग संबंधों में परिवर्त्तन आने लगे। इसके फलस्वरूप समाज के सामंती वर्ग के बदले में व्यापारी वर्ग का प्रभाव बढ़ा।

(2) औपनिवेशिक साम्राज्यों का विकास : भौगोलिक खोजों के उपरांत उपनिवेशों की स्थापना के रूप में साम्राज्यवाद का विकास जारी रहा और यूरोपीय राष्ट्रों में तीव्र प्रतिस्पर्द्धा भी चलती रही। इसके फलस्वरूप व्यापार के माध्यम और स्वरूप में भी परिवर्त्तन आये। व्यक्तियों की जगह अब संगठित व्यापारिक कंपनियों ने व्यापार का संचालन आरम्भ किया और इसी उद्देश्य से विशेषाधिकार तथा अन्य सुविधाएँ प्राप्त करने के लिए ये कंपनियाँ प्रयत्नशील हुई। इंग्लैंड, हॉलैंड, स्वीडेन, डेनमार्क, फ्रांस आदि देशों में ऐसी कंपनियाँ स्थापित हुई। इनमें से कुछ कम्पनियाँ व्यापारियों के द्वारा प्रायोजित थे और कुछ राज्य द्वारा। आगे अमेरिका, अफ्रिका, ऑस्ट्रेलिया तथा अन्य द्वीप समूहों में उपनिवेश एवं बस्तियाँ बसाई गई। प्रारम्भ में पुर्त्तगाल और स्पेन उपनिवेश स्थापित करने में अग्रणी रहे परन्तु 16 वीं सदी के अंत तथा 17 वीं सदी के प्रारम्भ में फ्रांस भी शामिल हो गया।

भारत में यूरोपीय कंपनियों की स्थापना

- पुर्त्तगालियों का आगमन-1498
- अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी-1600
- डच-1602
- फ्रांसीसी-1664
- डेनिस-1616
- स्वीडिश-1731

(3) वाणिज्यवाद का विकास : नये देशों की खोज तथा व्यापार के वैश्विक विस्तार के फलस्वरूप आधुनिक पूँजीवाद का जन्म हुआ। इस आर्थिक व्यवस्था में बुलियन की महत्ता बढ़ी। सोने की महत्ता ने यूरोपीय देशों का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सोने एवं चांदी की लूट हुई साथ-साथ इसका भंडारण भी किया जाने लगा। इन भंडारों की प्राप्ति में स्पेन अग्रणी था।

(4) ईसाई धर्म एवं पश्चिमी सभ्यता का प्रसार : जैसा कि पूर्व में उल्लिखित है कि भौगोलिक खोजों ने यूरोपीय देशों की सभ्यता, संस्कृति, धर्म एवं साहित्य का प्रचार-प्रसार किया। धर्मयुद्धों की असफलता के कारण ईसाई धर्म का प्रचार-प्रसार जो धीमा पड़ गया था, नये भौगोलिक खोजों ने इसमें प्राण डाल दिये । ईसाई धर्म प्रचारों ने अफ्रिका, एशिया तथा अमेरिका के दुर्गम स्थलों में जाकर अपना धर्म प्रचार किया। परन्तु इसका नकारात्मक प्रभाव यह पड़ा कि इन क्षेत्रों में धन का लालच देकर एवं जबरन धर्मान्तरण एवं सांस्कृतिक अतिक्रमण किया गया और इसका विरोध भी हुआ। दूसरी तरफ धर्म के व्यापक प्रसार ने चर्च की प्रभुसत्ता को कम किया। भौगोलिक खोजों के कारण हुई ज्ञान में वृद्धि से तत्कालीन धर्म के विषय में कई प्रश्न उठ खड़े हुए। धर्म को भी तर्क की कसौटी पर कसा जाने लगा। जिसने धर्म सुधार आन्दोलन की पृष्ठभूमि का निर्माण किया ।

(5) दास व्यापार का विकास : भौगोलिक खोजों के परिणामस्वरूप विकसित हुए व्यापार-वाणिज्य में 'मानव श्रम' की महत्ता ने दास व्यापार को प्रोत्साहित किया। नये अन्वेषित क्षेत्रों

अमेरिका, अफ्रिका तथा ऑस्ट्रेलिया के मूल निवासियों को पकड़कर उन्हें यूरोप के बाजारों में बेचा जाना शुरू हुआ। आरम्भ में गुलामों का व्यापार व्यक्तिगत स्तर पर था किन्तु 16 वीं शताब्दी के अंत में इसने बकायदा व्यापार का रूप धारण कर लिया। इन गुलामों से जंगल को काटने, खेती करने, सड़क बनाने, जहाजों में ईंधन झोंकने आदि कठिन कार्य करवाये जाते थे तथा इनपर अमानवीय बर्बर अत्याचार किये जाते थे। इस प्रकार भौगोलिक खोजों का यह नकारात्मक परिणाम था कि इसने तथाकथित सभ्य एवं विकसित लोगों द्वारा अविकसित, भोलेभाले एवं कमजोर लोगों का शोषण किया।

(6) भ्रंतियों का अंत एवं भौगोलिक ज्ञान में वृद्धि : भौगोलिक खोजों ने भौगोलिक ज्ञान के संदर्भ में व्याप्त भ्रंतियों को तोड़ने का कार्य किया। इससे चर्च द्वारा प्रसारित अवधारणाओं पर अंगुली उठने लगी। कालान्तर में यह यूरोप में धर्म सुधार आंदोलन का कारण बना। नए गोलार्द्ध के आविष्कार से यूरोप की क्षुद्रता और दुनिया की महत्ता की अभूतपूर्व जानकारी ने मनुष्य को नए-नए आविष्कारों के रास्ते पर खड़ा कर दिया। इसका संदेश स्पेनिश सिक्के **'सामने और भी है'** से स्पष्ट होता है।

बढ़े हुए सामुद्रिक गतिविधियों ने समुद्री यात्राओं में उपयोगी विभिन्न उपकरणों यथा-नक्शे, कम्पास, नक्षत्र प्रणाली आदि के विकसित होने का अवसर प्रदान किया। इससे संबंधित विद्वानों एवं पेशेवर वैज्ञानिकों के वर्ग का जन्म हुआ। कालांतर में इसी वर्ग ने 'पुनर्जागरण' में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की।

(7) अन्य परिणाम : भौगोलिक खोजों से विभिन्न प्रकार के नवीन फसलों का अंतर महाद्वीपीय आदान-प्रदान हुआ। जैसे- यूरोप में कहवा, चाय, गन्ना, मक्का, आलू, तम्बाकू, नील आदि नवीन वस्तुओं का प्रवेश हुआ तथा यूरोप के माध्यम से चाय, कॉफी, तम्बाकू, आलू का भारत जैसे देशों में आगमन हुआ। भारतीय फसल आम, गन्ना आदि दूसरे क्षेत्रों में गये।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि भौगोलिक खोजों ने विश्व की एक नई रूपरेखा सामने लायी। विचारों में परिवर्त्तन आये तथा वैज्ञानिक विचारों को मान्याताएँ मिली। धार्मिक अंधविश्वास टूटने लगे। दूसरी तरफ नये क्षेत्रों के अन्वेषणों तथा नवीन मार्गों के खोज के फलस्वरूप पूँजीवाद, वाणिज्य और साम्राज्यवाद का विकास हुआ । इसने दुनिया का यूरोपीयकरण कर दिया।

अन्य परिणाम :

- यूरोप विशेषकर इटली में नये नगरों का उद्भव
- भूमध्यसागर के महत्त्व में वृद्धि
- पूँजीवाद, वाणिज्यवाद और साम्राज्यवाद का विकास
- नौसैनिक क्रियाकलापों में वृद्धि

अभ्यास :

निर्देश : नीचे दिये गये प्रश्न में चार संकेत चिह्न हैं। जिनमें एक सही या सबसे उपयुक्त है। प्रश्नों का उत्तर देने के लिए प्रश्न संख्या के सामने वह संकेत चिह्न (क, ख, ग, घ) लिखें जो सही अथवा सबसे उपयुक्त हो।

I. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

1. वास्कोडिगामा कहाँ का यात्री था?

(क) स्पेन (ख) पुर्तगाल

(ग) इंग्लैंड (घ) अमेरिका

2. यूरोप वासियों ने दिशासूचक यंत्र का प्रयोग किनसे सीखा?

(क) भारत से (ख) रोम से

(ग) अरबों से (घ) चीन से

3. उत्तमआशा अंतरीप (Cape of good hope) की खोज किसने की?

(क) कोलम्बस (ख) वास्कोडिगामा

(ग) मैग्लेन (घ) डियाज बार्थोलोमियो

4. अमेरिका की खोज किस वर्ष की गई ?

(क) 1453 (ख) 1492

(ग) 1498 (घ) 1519

5. कुस्तुनतुनिया का पतन किस वर्ष की गई ?

(क) 1420 (ख) 1453

(ग) 1510 (घ) 1498

6. विश्व का चक्कर किस यात्री ने सर्वप्रथम लगाया ?

(क) मैग्लेन (ख) कैप्टन कुक

(ग) वास्कोडिगामा (घ) मार्कोपोलो

II. नीचे दिये गए कथनों में जो सही हो उनके सामने सही (✓) तथा जो गलत हों उनके सामने गलत (X) का चिह्न लगाएँ।

1. भारत के मूल निवासियों को रेड इंडियन कहा जाता है।
2. उत्तमाशा अंतरीप की खोज ने भारत तक पहुँचने का मार्ग प्रशस्त किया।
3. भारत अटलांटिक महासागर के पूर्वी तट पर स्थित है।

4. मार्कोपोलो ने भारत की खोज की।
5. जेरूशलम वर्त्तमान 'इजरायल' में है।
6. लिस्बन दास-व्यापार का बहुत बड़ा केन्द्र था।
7. अमेरिगु ने नई दुनिया को विस्तार से खोजा।

III. एक वाक्य में निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दें।

1. भारत आने में किस भारतीय व्यापारी ने वास्कोडिगामा की मदद की ?
2. न्यूफाउन्डलैंड का पता किसने लगाया ?
3. यूरोपीयों द्वारा निर्मित तेज चलने वाले जहाज को क्या कहा जाता था?
4. दक्षिण अफ्रिका का दक्षिणतम बिंदु कौन सा स्थल है?
5. 11वीं-12वीं शताब्दी में ईसाई एवं मुसलमानों के बीच धर्मयुद्ध क्यों हुआ था?
6. 1453 में कुस्तुनतुनिया पर किसने आधिपत्य जमाया ?
7. पुर्त्तगाल एवं स्पेन किस महासागर के पास अवस्थित हैं ?

IV. लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्नों का उत्तर कम से कम 30 एवं अधिकतम 50 शब्दों में दें।

1. यूरोप में मध्यकाल को अंधकार का युग क्यों कहा जाता है?
2. भौगोलिक खोजों में वैज्ञानिक उपकरणों का क्या योगदान था?
3. भौगोलिक खोजों ने व्यापार-वाणिज्य पर किस प्रकार प्रभाव डाले?
4. भौगोलिक खोजों ने किस प्रकार भ्रांतियों को तोड़ा ?
5. भौगोलिक खोजों ने किस प्रकार विश्व के मानचित्र में परिवर्तन लाया?

V. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में दें।

1. भौगोलिक खोजों का क्या तात्पर्य है? इसने किस प्रकार विश्व की दूरियाँ घटाई?
2. भौगोलिक खोजों के कारणों की व्याख्या करें।
3. नये अन्वेषित भूभागों को विश्व के मानचित्र पर अंकित करें। और यह बतावें कि भौगोलिक खोजों से पूर्व आप यदि यूरोप में होते तो भारत से किस-प्रकार व्यापार करते।
4. अंधकार युग से क्या समझते हैं? अंधकार युग से बाहर आने में भौगोलिक खोजों ने किस प्रकार मदद की?
5. भौगोलिक खोजों के परिणामों का वर्णन करें। इसने विश्व पर क्या प्रभाव डाला?